Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 12 | DECEMBER 2023

दशावतारचरितम् महाकाव्य में निरूपित प्रकृति चित्रण के विविध आयाम

रामकुमार आर्य [1] | सांवर मल जाट [2]

[1] असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत), राजकीय महाविद्यालय लसाड़िया सलूम्बर।

[2] असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत), राजकीय महाविद्यालय जैतारण ब्यावर।

ABSTRACT:

काश्मीर की प्राकृतिक सुषमा में पल्लवित–पुष्पित होकर भारतीय साहित्यशास्त्र में सौरभ बिखेरने वाले कवि आचार्य क्षेमेन्द्र की रचनाओं में प्रकृति के विविध आयाम बड़ी सूक्ष्मता और रमणीयता के साथ चित्रित किए हुए हैं। आचार्य प्रवर का दशावतारचरितं महाकाव्य पुराणाश्रित होने के उपरान्त भी प्रकृति चित्रण का उत्कृष्ट प्रतिमान है। कवि ने विभिन्न काव्यशास्त्रियों के सिद्धान्तों का पालन करते हुए महाकाव्य में यत्र–तत्र प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुपम छटा बिखेरी है। कवि ने अपनी अद्भुत कलात्मकता का परिचय देते हुए दशावतारचरितं में वर्षा, शरद, बसंत आदि ऋतुओं के वर्णन के साथ–साथ नदी, पर्वत, वन आदि का भी हृदयग्राही चित्रांकन किया है। प्रकृति के विभिन्न सोपानों के साथ–साथ प्रसंगानुसार कवि ने महाकाव्य में सौन्दर्य तथा युद्ध का वर्णन भी बड़ी रोचकता के साथ किया है। वस्तुतः दशावतारचरितं महाकाव्य का प्रकृति चित्रण अत्यन्त मनोहारी एवं सुरूचिपूर्ण प्रतीत होता है।

KEYWORDS:

परिचय

काव्य के वर्ण्य विषयों में प्रकृति वर्णन अपना विशिष्ट स्थान रखता है यही कारण है कि आदि कवि वाल्मीकि से लेकर पश्चाद्वर्ती सभी कविश्वरों ने प्रकृति नटी के विविध स्वरूपों को अपनी लेखनी का विषय बनाया है। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि जहाँ एक और कविकुल गुरू कालिदास प्रकृति के सुन्दर सुकुमार रूप के उपासक हैं और दूसरी ओर महाकवि भवभूति प्रकृति के भयानक एवं उग्र रूपों के वर्णन में विशेष प्रकर्ष दिखाते हैं, वही महाकवि क्षेमेन्द्र समानान्तर रूप से प्रकृति के सुकुमार एवं कठोर स्वरूपों का वर्णन कर अपना वैशिष्ट्य प्रदर्शित करते हैं। इसके अतिरिक्त एक ही प्राकृतिक दृश्य का कोमल और कठोर चित्र खींचकर क्षेमेन्द्र, कालिदास और भवभूति से भी कुछ आगे बढ़ जाते हैं। मानव और प्रकृति का तो अनादिकाल से सम्बन्ध रहा है। परिस्थितियों के अनुरूप दोनों के सम्बन्ध में परिवर्तन का क्रम गतिमान रहा है। जहाँ तक प्रस्तुत महाकाव्यगत प्रकृति–चित्रण का प्रश्न है इस विचारबिन्दु से भी प्रायः सम्पूर्ण महाकाव्य सुचित्रित पाया गया है।

वन वर्णन

कवि ने महाकाव्य में वन, पर्वत, ऋतुयें, सन्ध्या, वृक्ष, सौन्दर्य आदि अनेकशः वर्ण्य विषयों का अतिसूक्ष्म, सरस, स्वाभाविक एवं मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। इसी क्रम में कवि का वन वर्णन अति रमणीय बन पड़ता हैं, जिसका परिचय निम्न पद्य से जान पडता है जहाँ हरे–भरे काले जैसे केले के उपवनों, बरगद की फैली हुई लताओं वाली, लम्बी फेली हुई गोल लौकियों (तूम्बियों) कुम्हणों से भरी–पूरी बल खाती, टेढ़ी–मेढ़ी तरंगो वाली छोटी नदी की कलकल ध्वनि से गूंजती हुई, अंगूर की अतिशय शीतल लताओं से घिरी हुई सुखद शय्या जैसी आश्रय देने वाली पगडण्डियों वाली भूमि वनस्थली से घिरी हुई है।

कदलीश्यामलारामवटवाटलतावृताम्।
लम्बमानघनालाबुतुम्बकूष्माण्डमण्डलाम्।।
वलत्कुटिलकल्लोलकुल्याकलकलाकुलाम्।
द्राक्षासुशीतलतलस्थलीशय्याश्रयाध्वगाम्।।[1]

ऋतु वर्णन

प्राकृतिक चित्रण के प्रसंग में ऋतुओं का वर्णन किसी भी काव्य का अपरिहार्य तत्त्व बन जाता है। भारत की सुरम्य प्राकृतिक छटा में ऋतुओं की भूमिका अत्यन्त सशक्त कही जा सकती है। प्रत्येक ऋतु अपने–आप में विशिष्ट और आवश्यक है। ऋतु वर्णन से काव्य विशिष्टता तो आती ही है विविधता भी दृष्टिगत होती है। आचार्य क्षेमेन्द्र ने इस तथ्य को भलीभांति जाना और समझा है तथा इसका अनुसरण भी किया है। आचार्य प्रवर ने दशावतारचरितं महाकाव्य में वर्षा–शरद–वसंतादि ऋतुओं का सुन्दर चित्रण उपस्थापित किया है–

(1) वर्षा–ऋतु–

वर्षा ऋतु के आगमन पर हनुमान आदि श्रेष्ठ वानरों के सहयोग से सुग्रीव को राज्य पद पर अभिषिक्त कर तथा उसके योग्य युवराज हेतु बालिपुत्र अङ्गद को उस सुग्रीवराज का अनुयायी बनाकर वियोग दुःख से सन्तप्त श्रीराम चमकती विद्युत के प्रकाश से दीप्त उमड़े हुए बादलों वाले प्रस्रवण पर्वत पर स्वयं अपना समय व्यतीत करने लगे। मित्रों द्वारा सुगठित सीता का पता लगाने वाली समिति पर धैर्ययुक्त आशा एवं विश्वास करके प्रस्रवण पर्वत पर रामचन्द्र जी मेघों का घुमड़ना, गरजना, अनवरत बिजली का चमकना, जुगनू कीटों का चमकना बन्द होना, कदम्ब पुष्पों की सुगन्धित वायु और मुस्कराती हुई उस केतकी, वर्षा ऋतु के सशक्त प्रभाव को सहन करते रहे।

सुग्रीवं हनुमन्मुखैः परिवृतं राज्येऽभिषिच्य स्वयं
कृत्वा वालिजमङ्गदं तदनुगं तदौवराज्योर्जितम्।
रामः प्रस्रवणे गिरौ समनयोद्वेद्युत्प्रभापिंगल
श्मश्रुव्याकुलमेघसंघकलिले काल वियोगाकुलः।।
संरम्भोर्जितगर्जितं जलधरं क्षिप्रोद्यतां विद्युतं,
खद्योतस्फुटनं कदम्बपवनं तां सस्मितां केलकीम्।
सेहे सर्वममोधमेघचरितं रामः सुहृन्निर्मितां
सीतान्वेषणसंविदं धृतिमयीमाशां निवेश्याशये।।[2]

(2) शरद ऋतु

शरद्ऋतु को एक ललना के सौन्दर्य से विभूषित करते हुए, कवि लिखता है कि देवगण लक्ष्मीनाथ विष्णु की शरण इसी शरद् ऋतु में पहुँचते हैं। इस सन्दर्भ में क्षेमेन्द्र ने इस ऋतु का जो सरस चित्रण, मौलिक उद्भावनायें तथा अभिनव उत्प्रेक्षायें की हैं वे बड़ी सरस और हृदयग्राही हैं। उदाहरणमुखेन संक्षेपतः कतिपय सूक्तियाँ अवलोकनीय हैं–

अथ त्यक्तजलासङ्ग प्रसन्नगगनद्युतिः।
प्रतिबुद्धः शरत्कालः श्रीकान्तः समुपाययौ।।
मयूरा मौनिनोऽरण्ये ययुर्दैन्यनिलीनताम्।
शरत्कालेन बलिना सुरा इव हृतश्रियः।।
वबुर्देवकदम्बेषु धातेषु विशरारूताम्।
द्युलोकशोकनिःश्वासा इव सप्तच्छदानिलाः।।
लोकपाल वियोगिन्यः ककुभः काशपाण्डुराः।
फुल्लैः कमलकह्लरिः कृतशय्या इवाबभुः।।
ययुः शुकमृगापाते कलमक्षेत्रपक्तयः।
विधवा इव तारूण्ये कृच्छ्रसंरक्षणीयताम्।।[3]

इसी के साथ जलातिशय प्रभाव को त्यागा हुआ स्वच्छ आकाशीय कान्ति वाला

प्रकाशमान लक्ष्मीप्रिय शरद्ऋतु का समय आ गया। बलिराज के द्वारा छिनी हुई सम्पत्तियों वाले देवताओं की तरह शरत्काल से अपहृत प्रसन्नता वाले मौनी मयूर पक्षी वन में दीन दुःखी होकर छिप गये। देवकदम्ब वृक्षों के नष्ट हो जाने पर आकाश की शोक सन्तप्त निःश्वासों जैसी सप्तपर्ण वृक्षों की हवायें चलने लगीं। लोकपाल–दिशारक्षक गजों की वियोगिनी काशपुष्प जैसी पाण्डु–पीले रङ्गवाली दिशायें प्रस्फुटित सफेद कमलों और कदम्ब पुष्पों द्वारा रचित शय्या जैसी शोभायमान होने लगी। शरद् ऋतु में शुक पक्षियों और मृग पशुओं के आक्रमण से सुगन्धित धानों के खेतों की सुरक्षा वैसे ही अति कठिन हो गयी है जैसे युवावस्था में विधवा (मृत पति) स्त्री की रक्षा कठिन हो जाया करती है। रामावतार के अन्तर्गत भी शरद् ऋतु का बड़ा ही सरस चित्रण किया गया है–

ततः प्रयाते घनमेघकाले प्रशान्तवाष्पेषु दिशां मुखेषु।
मित्रोदयश्रीरिव हर्षहेतुः पद्माकराणां शरदाजगाम।।[4]

तत्पश्चात् काले बादलों के दूर चले समाप्त हो जाने तथा दिशा के मुख वर्षारूपी आँसुओं से रहित अर्थात् दिशाओं के स्वच्छ हो जाने पर सूर्योदय की सुषमा जैसी कमल–सरोवरों की प्रसन्नता की कारणभूत शरद् ऋतु आ गयी।

(3) वसन्त ऋतु–

क्षेमेन्द्र ने ऋतुराज वसन्त की अवतारणा के प्रसंग में कहा है कि लोगों के मनरूपी वन में प्रेमरूपी लता को पल्लवित (आनन्दित) करता हुआ वसन्त यौवनयुक्त लताओं (युवतियों) में आ गया।[5] झूमते हुए आम्रवृक्ष के बौरोवाला पीला वस्त्र पहना हुआ सुन्दर, अलसी के पुष्पों जैसा श्यामवर्ण अभिनव वसन्त शोभायमान होने लगा।[6] कामदेव की आराधना में बसन्तोत्सव मनाती हुई लता–मञ्जरियाँ कूकती हुई कोयलों की कण्ठकाकलीरूपा बांसुरी की तान (स्वर–गीत–लहरियों) से आम्रवृक्ष के पराग से मदमस्त भ्रमरों की ध्वनि से मिश्रित तन्त्री–ध्वनि की मधुरता और भी अधिक बढ़ जाने पर सिखाने में निपुण दक्षिण दिशा की वायु के मन्द–मन्द चलने से मानो पादक्षेप करती हुई नाचने लगी।[7]

चन्द्रोदय वर्णन

चन्द्रोदय वर्णन में कवि की सूक्ष्म एवं भावपूर्ण आलंकारिक कल्पना प्रतिभा के एक दो चित्र उपयुक्त ही होंगे। रात्रि के समय उदीयमान चन्द्र की छवि ऐसी लगती है कि अमृतवर्षारूपी पसीने से गीले किरण रूपी हाथों को फैलाता हुआ चन्द्रमा दिशाओं का एक ही समान आलिङ्गन करने से उत्पन्न उनकी ईर्ष्या को फैलाता हुआ उदय हो गया। तत्पश्चात् किरणरूपी हाथों से अन्धकाररूपी काले परदे को हटाता हुआ जवान चन्द्रमारूपी प्रियतम रात्रिरूपी षोड्शी के उदय होते हुए चमकीले तारों वाले, चमकते हुए आभूषणों वाले मुख को चूमने लगा।

अथोद्ययौ सुधास्यन्दस्वेदार्द्रप्रसरत्करः।
तुल्यालिङ्गनजामीर्ष्या दिशन्निव दिशां शशी।।
ततस्तारूण्यवानिन्दुर्मीलत्तरलतारकम्।
मुखं चुचुम्ब श्यामायाः कराकृष्टतमः पटः।।[8]

नदी वर्णन

भारतीय संस्कृति में नदियों की महत्ता सर्वविदित है। भारतीय नदियां केवल प्राकृतिक दृष्टि से ही नहीं अपितु धार्मिक दृष्टि से भी भारतीय जनमानस को प्रभावित करती है। प्राचीन काल से अद्यावधि पर्यन्त नदी वर्णन को प्रायः सभी कवियों ने अपनी रचनाओं में स्थान देकर सहृदय सामाजिकों को आनन्द विभोर किया है।

(1) यमुना नदी

एक ही प्राकृतिक दृश्य को अपनी प्रतिभा की तूलिका से सुकुमार एवं भीषण स्वरूप देते हुए महाकवि क्षेमेन्द्र का यह यमुना वर्णन उत्प्रेक्षा और रूपकों की सहायता से द्विगुणित सौन्दर्ययुक्त हो जाता है। यमुना के किनारे जल में क्रीड़ा करते हुए कन्दुक के गिर जाने पर श्रीकृष्ण ने कालिया नाग के भयंकर रूप–अस्तित्व अथवा आवास को देखा। यहाँ यमुनाजी में भय से भी भयंकर काल कैसे रह रहा है, जलरूपी काल से (चुम्बक की तरह) खींचे जाते हुए भी वे श्रीकृष्ण जी उस काल को देखने के लिये तत्पर हो गये।

पतिते यमुनाकूलसलिले केलिकन्दुके।
ददर्श कालियस्योग्रं नागस्य भवनं हरिः।।
कालः कथं वसतीह (त्येव) भयस्यापि भयङ्करः।
सः तैराकृष्यमाणोऽपि कृष्णस्तददर्शनोद्यतः।।[9]

(2) गंगा नदी

गंगा नदी के प्रसंग में कवि क्षेमेन्द्र ने लिखा है कि तीर्थसेवी अर्जुन ने पूर्व वचनवद्धता का स्मरण कर गङ्गाजी के जल में गोता लगाते हुए पाताल में उलूपी नामक नागकन्या को प्राप्त कर लिया।

स्मृत्वाथ संविदं पार्थस्तीर्थार्थी जाह्नवीजले।
मज्जनुलूपीं पाताले नागकन्यामवाप्तवान्।।[10]

पर्वत वर्णन–

प्राकृतिक वर्णन करते हुये प्रसंग प्राप्त गन्धमादन, गोवर्धन, रैवत, ऋष्यमूक आदि पर्वतों के वर्णन भी अतीव रोचक हुये हैं। कूर्मावतार में समुद्र मन्थन के प्रसंग में मन्दराचल पर्वत का वर्णन किया गया है। बलशाली देवों और दिति के उद्धतवीर्य दैत्यपुत्रों की मन्दराचल पर्वत के द्वारा अमृत प्राप्ति के लिये समुद्र को मथने की इच्छा हुई।[11] इसके पश्चात् रूचिपूर्वक महत्कार्य के प्रति दृढ़ निश्चयी देवता और दानवों ने विष्णु के पास पहुँचकर निवेदन किया। याचक हित में विष्णुजी ने भी मथने में उपयुक्त टूटी–फूटी गुफाओं वाले मन्दर पर्वत को उखाड़ लिया।[12] समुद्र तट पर देवताओं और दैत्यों के बैठ जाने पर, पर्वतराज मन्दर को फेंकने के लिए उद्यत भगवान विष्णु को देखकर शरीरधारी क्षीरसागर ने हाथ जोड़े हुए निवेदन किया।[13] अमृतसागर के यथार्थ कथन को सुनकर और उसे ही उचित मानकर विष्णु जी ने मन्थन कार्य हेतु मन्दाराचल को धारण करने के लिए दूसरा कूर्म का अवतार धारण किया।[14]

इसी भांति रामावतार प्रसंग से ऋष्यमूक पर्वत का वर्णन किया गया है कि (सीतान्वेषण करते हुए) धीरे–धीरे वह राम ऋष्यमूक पर्वत पहुंचकर प्रसिद्ध बलशाली वानरराज सुग्रीव से परस्पर हित और प्रतिष्ठा हेतु मैत्री सम्बन्ध में बँध गये।

शनैरवाप्याचलऋष्यमूकं सुग्रीवनाम्ना प्लवगेश्वरेण।
परस्पराबद्ध हित प्रतिष्ठं स प्राप विख्यातबलेन सख्यम्।।[15]

वृक्ष वर्णन

वृक्षों का चित्रण करते हुए क्षेमेन्द्र ने अनुप्रास के सुविन्यास द्वारा वनावली को आस्वाद्य रूप प्रदान किया है–

तालीतालतमालसाल कंदलीपथ्यामलीश्यामलं
खर्जूरार्जुनसर्जबिल्वबकुलप्लक्षाक्षलक्षाकुलम्।
पर्यन्ते स ददर्श हर्षजननं स्फीतोपदेशं गवां
निः श्रवभ्रस्थलपुष्पशष्पशबलं निःशङ्कुलं गोकुलम्।।[16]

अर्थात् अक्रूर ने चारों ओर गायों के ताड़ी (पहाड़ी ताड़ का वृक्ष) तालवृक्ष, तमाल, साल, केला, हर्रा, आमला के हरे–भरे वृक्षों वाले, खजूर, अर्जुनसर्ज (राल) के वृक्ष, बेल–बकुट, वट–पाकरि वृक्ष, रूद्राक्ष, बहेड़ा के लाखों वृक्षों से भरा हुआ प्रसन्न करने वाला, शुद्ध विचारोत्पादक पुष्पों तथा हरी दूब आदि से भरी हुई समतल भूमि एवं गायों–गोपालों से परिपूर्ण वन को देखा।

युद्ध वर्णन–

युद्ध वर्णन भी इस महाकाव्य में कृष्णावतार प्रसंग में देखने को मिलता है। बाणासुर, कृष्ण युद्ध व कौरव पाण्डवों का युद्ध वर्णन किया गया है। बाणासुर के आयुधों की वर्षा से आकाश के छा जाने पर सेना की धूलि से चमकते हुए सूर्य के ढक जाने पर शङ्कर से प्राप्त तीक्ष्ण बाणों के समूह से युद्ध के भर जाने पर तीनों लोकों के प्रलय समागम की आशङ्का से ग्रस्त हो जाने पर वीरों (अनिरूद्ध, बलराम, श्रीकृष्ण और प्रद्युम्न) के छोड़े हुए शरीर छेदन करने वाले बाण चलने लगे। इसके पश्चात् युद्धक्षेत्र में गरूड़ से उतरकर हलधर बलराम के द्वारा बलपूर्वक हल से खींचा गया बाणासुर का जीवन या शरीर दो टुकड़ों में विभाजित हो गया।

दैत्येन्द्रायुधवृष्टिनष्टगमने सेनारजः स्फूर्जित–
ग्रस्ताग्रे (र्के) प्रसरत्पि विशिरवग्रता वकीर्णे रणे।
कल्पान्तागमशङ्कते त्रिभुवने चेरूः शरीरच्छिदः
शूराणामनिरूद्ध राममुरजित्प्रद्युम्नमुक्ताः शराः।।
गरूड़ादवरूह्याथ बलेन बलिना रणे।
हलेन हलिना कुष्टा दैत्यदेहा द्विधा ययुः।।[17]

इसके अतिरिक्त समाज के विभिन्न तत्वों, परिस्थितियों, घटनाओं का यथातथ्य आदर्शोन्मुखी चित्रण करने में क्षेमेन्द्र सिद्धहस्त रहे हैं। इस महाकाव्य का अनुशीलन करने पर धनमहिमा, दानमहत्त्व, परोपकार जैसे नैतिक तत्त्वों से सम्पूर्ण काव्य ही पुरूषार्थ चतुष्ट्य की सिद्धि कराने में सफल पाया जाता है। अलङ्कारों एवं स्वतन्त्र चित्रण के रूप में याचना वृति की निन्दा, बलात्कार को महापातक, विनाश से वैराग्य, स्त्री–अपहरण, खलनिन्दा, राजाचरण, बन्धुत्वभावना, अतिथि–सत्कार, कन्या–अभिशाप–पुनर्जन्म, सेवावृत्ति, चन्द्रोदय आदि के उत्तम चित्रणों से समन्वित दशावतारचरितम् एक सफल महाकाव्य के रूप में सुपठनीय है।

सौन्दर्य वर्णन

क्षेमेन्द्र की सौन्दर्यदृष्टि एवं नारी भावना विषयक चिन्तन को भी इस काव्य में अनेकत्र देखा जा सकता है। सुधासहोदरी मोहिनी–सीता वेदवती तथा ब्रज गोपिकाओं के श्रृंङ्गारिक वर्णन इस सन्दर्भ में विशेष रूप से सुपठनीय है। रावणाश्रयी सीता चित्रण इस प्रकार है–

लावण्यं सकलाङ्गसङ्गसुभगं माधुर्यधुर्यं वच–
स्तीक्ष्णान्ता नयनद्वयी च सुतरां प्रान्ते कषायच्छविः।
मूर्तिः कान्तिसुधाचिता रसमयी चित्रं चमत्कारिणी
यत्नेनाप्यभिलक्ष्यमम्लकटुकं किंचिन्ने ते चेष्टितम्।।[18]

अर्थात् तुम्हारे समस्त शरीर में व्याप्त सहज मनोहरता, सलोनापन, अतिशय मधुरतापूर्ण वाणी, तीखे–कटीले दोनों नेत्र, जिनके प्रान्तभाग में कुछ–कुछ लालिमा और भी अधिक आकर्षक है, अतिशय विस्मयोत्पादक आनन्दमयी कान्ति रूपी अमृत से भरा हुआ यह शरीर, जिसमें प्रयत्नपूर्वक खोजने पर भी किसी भी प्रकार की अरूचिकारक कमी या कोई हाव–भाव नहीं पाये जाते।

इसी प्रकार उषा–चित्रण तो नारी सौन्दर्य के उत्तम प्रसंगों में एक कहा जा सकता है। अनिरूद्ध ने उषा की रूपराशि का जो दर्शन किया वह विधाता की सर्वोत्तम सृष्टि रति से किसी प्रकार कम नहीं है। वह कहता है–

इन्दोः संक्षयरक्षणाक्षतसुधा किं वेधसा निर्मिता।
किं धैर्यापहरा हरस्य विहिता कामेन कान्ता तनुः।।
शिं तारूण्यबसन्तकान्तिलतिका श्रृङ्गारसिक्तालता
किं लावण्यतरङ्गिणी पुनरियं जन्मान्तराप्ता रतिः।।[19]

अर्थात् यह उषा क्या विधाता के द्वारा चन्द्रमा के विनाश को बचाने हेतु बनायी गयी अनूठी सुधा है, अथवा क्या कामदेव से निर्मित शङ्कर के धैर्य व्रत को तोड़नेवाली सुन्दर शरीरा स्त्री है, अथवा क्या यह श्रृंङ्गार से सींची गयी–अनुप्राणित बसन्त की कान्तिलता है अथवा क्या यह लावण्य–सौन्दर्यरूपी नदी–लावण्य को बहाने वाली रति ही पुनः दूसरे जन्म में पैदा हो गयी है।

उषा के दृष्टिपात से आहत अनिरूद्ध की वाणी ही मौन होती पायी जाती है–

कटाक्षः संधते कुवलयकुलक्लैब्यकलनां
मुखे दृश्यश्चन्द्रद्युतिहरण हेलापरिचयः।
असंरूद्रा बाधाधरदलरूचिर्विद्रुमतरो–
रहो सारङ्गाक्ष्याः प्रसभविजयी रूपविभवः।।[20]

इस उषा का कटाक्ष (नेत्रों की भावभङ्गिमा) नील कमलों की ग्राह्यता को प्रभावहीन करने वाली है, मुख में चन्द्रमा की कान्ति को सहज ही हरण किया हुआ देखा जा सकता है, मूंगा रत्न के वृक्ष की दीप्ति को इसके अधरों ने सहज ही बाधित कर रखा है, अरे इस मृगनयनी की रूपसम्पदा बलात् ही विजयश्रीसम्पन्न है।

नारी श्रृंङ्गार के लिये किन साधनों की आवश्यकता होती है, यह भी क्षेमेन्द्र की दृष्टि से अनदेखे नहीं रह पाये। इसी सन्दर्भ में प्रस्तुत सूक्ति पठनीय है–

न्याकीर्णा कवरी मुखं वितिलकं ताम्बूललिप्ते ऽक्षिणी
कण्ठे कङ्कणलक्ष्म हारविरतिदंशोऽधरें निव्रंणः।
प्रातः प्रच्युतचन्दना स्तनतटी सायं स्ववेषक्रिया
संभोगाभरणा तनुर्वरतनोः शङ्कास्पदत्वंययौ।।[21]

इस प्रकार प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों का चित्रण कर कवि क्षेमेन्द्र ने महाकाव्य की रोचकता एवं लयबद्धता में वृद्धि करते हुए पाठकों को सराबोर कर दिया है। निःसन्देह काव्य में उभय पक्ष प्रधान होते हैं किन्तु कवि अपनी कल्पनाओं और मौलिक उद्भावनाओं से इनमें विशिष्टता लाकर नूतन अनुभव देने का श्रम करता है। दशावतारचरितं महाकाव्य में कवि का परिश्रम और उद्देश्य दोनों सार्थक हुए हैं।

निष्कर्ष

दशावतारचरितं महाकाव्य में कवि ने महाकाव्य परम्परा का निर्वहन करते हुए विभिन्न स्थानों पर प्रसंगानुकूल प्रकृति विभिन्न दृश्यों को चित्रित कर सम्पूर्ण महाकाव्य में रोचकता और सरसता में सामंजस्य बनाये रखा है। कवि ने ऋतु वर्णन प्रसंग में उदारता बरतते हुए शरद–बसंत–वर्षा ऋतु का रमणीय चित्रण किया है। इसी प्रकार कवि क्षेमेन्द्र का महाकाव्य में किया गया चन्द्रोदय, नदी, पर्वत वर्णन भी उत्तम कोटि का है। कवि की कुशलता का परिणाम है कि सहृदय सामाजिक जहां सौन्दर्य निमज्जित हुए बिना नहीं रह सकता वहीं दूसरी ओर युद्ध वर्णन का प्रसंग भी विशिष्टता लिये हुए है।

REFERENCES

1. दशावतारचरितं– 8/143–144
2. दशावतारचरितं– 7/167–168
3. दशावतारचरितं– 5/82–84,87,91
4. दशावतारचरितं– 7/169
5. दशावतारचरितं– 8/230
6. दशावतारचरितं– 8/231
7. दशावतारचरितं– 8/234
8. दशावतारचरितं–8/87–88
9. दशावतारचरितं–8/44–46
10. दशावतारचरितं– 8/410
11. दशावतारचरितं– 2/5
12. दशावतारचरितं– 2/6
13. दशावतारचरितं– 2/7
14. दशावतारचरितं– 2/11
15. दशावतारचरितं– 7/264
16. दशावतारचरितं– 8/141
17. दशावतारचरितं– 8/312–313
18. दशावतारचरितं– 7/139
19. दशावतारचरितं–8/271
20. दशावतारचरितं– 8/272
21. दशावतारचरितं– 8/284